Ñfr % fo'kny?kqpuonsork foèkku
Ñfrdkj % i-iw- lkfgR;jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxj th egkjkt
laLdj.k % izFke&2013* izfr;k¡ %1000
ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxj th egkjkt
lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkSelkxj th egkjkt
laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ vkLFkk nhnh] liuk nhnh
la;kstu % lksuw] fdj.k] vkjrh nhnh] mek nhnh
lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155
izkfIr LFky % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZyd wpkj xksèkk] 2142] fueZy fudat] jsfM;ks ekdsZV] efugkjksa dk jkLrk] t;iqj Qksu % 0141&2319907 ¼?kj½ eks- % 9414812008
2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj ,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- % 9414016566
3- fo'kn lkfgR; dsUnz] Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879
4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh fu;j ykydqvk¡ pkSd] xka/kh uxj] fnYyh eks- 09818115971] 09136248971
ewY; % 31@& #- ek=k

पावन अवसर : श्री दिगम्बर जैन मंदिर भजनपुरा, दिल्ली में वार्षिक रथयात्रा के उपलक्ष में
सान्निध्य : प. पू. आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज,
मुनि श्री 108 विशालसागर जी, क्षुल्लक श्री विसौमसागर जी महाराज

—: अर्थ सौजन्य :—

Lo- yky kJh Hkkxe ky t Su ¼ hrjokMk oky s½
Jh lrh'kt Su ¼ eq½ Jhefr 'kf'kt Su ¼ eq o/kq½
सी—277, गली न. 11, जैन स्थानक के पीछे, भजनपुरा, दिल्ली—110053
फोन : 08826496087, 09871640077

eqnzd % ikjl izdk'ku] fnYyh Qksu ua- % 9811374961] 9818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com

''नवदेवता व्रत विधि''

जैन धर्म में नो देवता माने गये हैं—*अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनआगम, जिन चैत्य जिन चैत्यालय।* इन्हीं नवदेवताओं की नव देवता व्रत विधि यहाँ दी जा रही है। नवदेवता व्रत अश्विन शुक्ला एकम से अश्विन शुक्ला नवमी तक किया जाता है। पुनः दशमी को पूजा करके आहार दानादि देकर व्रत का समापन करें, इस प्रकार 9 वर्ष तक यह व्रत किया जाता है। व्रतों के दिनों में प्रतिदिन श्री जी का या नवदेवता की प्रतिमा का अभिषेक करें नवदेवता पूजन करें यथायोग्य व्रत, नियम, संयम पूर्वक व्रतों के दिनों को बिताए नो दिन की यहाँ अलग अलग जाप्य दी जा रही है। यह जाप्य शुद्धतापूर्वक सम्पन्न करें। 9 वर्ष करके यथाशक्ति उद्यापन करें। चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवें। **आचार्य श्री विशदसागर जी** द्वारा रचित यह **नवदेवता विधान** करें। उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार व जघन्य विधि एकाशन है। इस व्रत को करने से पुत्र सुख प्राप्ति, धन की वृद्धि, यश कीर्ति की प्राप्ति होकर परभव में मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

व्रत की जाप्य—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्योनमः।

प्रत्येक व्रत के अलग अलग मंत्र—

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिन धर्मेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनगमेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिन चैत्येभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिन चैत्यालयेभ्यो नमः।

संकलन—**मुनि विशालसागर**

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥ शान्तये शांतिधारा...

दोहा–**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

स्तवन

दोहा– पूज्य रहे नव देवता, महिमामयी महान।
भक्ति भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(शंभू छन्द)

सत्य स्वरूपी परम आत्मशुभ, श्रीजिन छियालिस गुणधारी।
लोकालोक विलोकी अर्हत्, इस जग में मंगलकारी।।1।।

रहित जन्म-मृत्यू अर्ति से, विश्वेषु जिन भयहारी।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी, इस जगमें मंगलकारी।।2।।

परं शुद्ध आतम आराधक, जिन अर्हन्त रूपधारी।
जिनाचार नर सुर से पूजित, इस जग में मंगलकारी।।3।।

श्रेष्ठ विमल पंतीश्वर ध्याता, स्वात्म ज्ञान वृद्धीकारी।
उपाध्याय निर्द्वन्द सुपाठक, इस जग में मंगलकारी।।4।।

निज आतम के रसिक श्रेष्ठ जो, ज्ञान ध्यान शुद्धाचारी।
देवेन्द्रों से पूजित मुनिवर, इस जग में मंगलकारी।।5।।

सकल विमल सुदिव्य तीर्थ के, अधिपति पावन हितकारी।
जिनवर कथित धर्म है पावन, इस जग में मंगलकारी।।6।।

याथातथ्य अजेय सुशासन, आप्त कथित है हितकारी।
कोटि प्रभा भाषित जैनागम, इस जग में मंगलकारी।।7।।

स्वात्मानंद प्रशांत वदनमय, जिन मुद्रा है अविकारी।
सौम्य सुनिर्मल जिन प्रतिमा है, इस जग में मंगलकारी।।8।।

महत् पुण्यकारक सत् किरिया, भवि जीवों को हितकारी।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, इस जग में मंगलकारी।।9।।

उज्ज्वलतम् विशुद्ध समतामय, सुचरित्रमय अघहारी।
'विशद' धर्म आतम सुखदायक, इस जग में मंगलकारी।।10।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

लघु नवदेवता विधान पूजन

स्थापना

अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जग हितकारी।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम मंगलकारी।।
भव्य जीव नव देवों के प्रति, रखते हैं सम्यक श्रद्धान।
शिव पद पाने को हम उर में, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह! अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

प्रासुक यह नीर कराए, त्रय रोग नशाने आए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, भव रोग दूर हो जाए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह पुष्प चढ़ाएँ, हम काम रोग विनसाएँ।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसमय नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाए, मोहान्ध नाश हो जाए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप जलाते स्वामी, बन जाएँ शिव पथ गामी।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे हम यह लाए, मुक्ती पद पाने आए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, हम भी अनर्घ्य पद पाएँ।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांती धारा से मिले, मन में शांति अपार।**
अतः आपके पद युगल, देते शांती धार।।

शांतये शांति धारा .....

पुष्पांजलि के लिए यह, पावन लाए फूल।
कर्मों से मुक्ती मिले, शिव पद हो अनुकूल॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिन आगम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **पूजनीय नवदेवता, जग में रहे त्रिकाल।**
भाव सहित गाते यहाँ, उनकी हम जयमाल॥

(वीर छन्द)

नव कोटी से नवदेवों के, पद पंकज में करें प्रणाम।
निज स्वरूप के ज्ञान हेतु हम, सबको ध्याते आठोयाम॥
धन्य धन्य अरहंत परम प्रभु, चार घातिया कर्म विहीन।
सर्व लोक के ज्ञात दृष्टा, सम्यक् केवल ज्ञान प्रवीण॥1॥
सहज ज्ञान स्वरूप धन्य हैं, सिद्ध महाप्रभु महिमावंत।
त्रैकालिक ध्रुव गुण अनंत के, धारी सिद्ध अनंतानंत॥
पञ्चाचार परायण अनुपम, धन्य धन्य आचार्य महान्।
शिक्षा दीक्षा दाता गुरुवर, भव्यों को दें सम्यक्ज्ञान॥2॥
उपाध्याय मुनिधन्य लोक में, द्वादशांग श्रुत के धारी।
ज्ञाता द्रव्य भाव श्रुत के शुभ, मोक्ष पंथ के अधिकारी॥
रत्नत्रय का पालन करते, ज्ञान ध्यान तप रहते लीन।
विषयाशा के त्यागी मुनिवर, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीण॥3॥
धर्म वस्तु स्वभाव रूप है, सर्व जगत में रहा महान।
परम अहिंसामयी धर्म शुभ, जीवों का करता कल्याण॥
स्याद्वाद रवि से आलोकित, सुर नर पूजित लोक महान्।
सन्देहादिक दोष रहित शुभ, सप्त तत्व का जिसमें ज्ञान॥4॥
अर्हन्तों की प्रातिहार्य युत, निर्विकार मुद्रा पावन।

काष्ठ उपल धातू का अनुपम, बिम्ब बना हो मनभावन॥
घंटा तोरण से सुसज्जित, परकोटा संयुक्त महान्।
कलश युक्त शुभ शिखर मनोहर, से दिखती हैं ऊँची शान॥5॥

दोहा– **पूजा कर नव देव की, पूज्य बनें धीमान्।**
धन वैभव सुख प्राप्त कर, करें आत्मकल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नवदेवों की भक्ति से, हो कर्मों का नाश।**
'विशद' ज्ञान पाकर शुभम्, होवे मुक्ती वास॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री अरहंत परमेष्ठी की पूजा

स्थापना

दोहा– **कर्म घातिया नाश कर, बनते हैं अर्हन्त।**
विशद ज्ञानधारी बनें, मुक्ति वधू के कंत॥

ॐ ह्राँ घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्राँ घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्राँ घातिकर्म विनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल से निर्मल हैं गुण मेरे, जिनकी अब याद सताई है।
निर्मलता उपमातीत अतः, पाने की बारी आई है॥
जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व. स्वाहा।

अब शीतलता की चाह नहीं, निज शीतल गुण प्रगटाएँगे।
हम भाव बनाकर निर्मलतम, चन्दन यह श्रेष्ठ चढ़ाएँगे॥

जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अखण्ड मेरा स्वरूप, खण्डित ना खंजर कर पाए।
पाने अखण्ड वह पद अक्षत, यह आज चढ़ाने हम लाए।।
जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

निज गुण से सुरभित है चेतन, रागादि विकार ना रह पाएँ।
हम काम रोग को नाश करें शुभ, पुष्प ले पूजा को आएँ।।
जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानामृत रहा सरस व्यंजन, हो तृप्त सदा इससे चेतन।
चेतन में रोग क्षुधादि नहीं, भोजन है मात्र तन का चेतन।।
जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है कोटि सूर्य से दीप्तिमान, चेतन में ना मिथ्यात्व रहे।
हम दीप जलाते यह पावन, चेतन से ज्ञान की धार बहे।।
जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

चेतन कर्मों से भिन्न रहा, दोनों रहते न्यारे-न्यारे।
ना कर्म नष्ट हो सके पूर्ण, हम धूप जलाकर के हारे।।
जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसी करनी वैसी भरनी, करनी का फल प्राणी पाते।
जो फल से पूजा करते वह, निश्चित ही शिवपुर को जाते।।
जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण निज में रहते हैं, फिर भी उनको बिसराए हैं।
पाएँ अनर्घ्य पद वह प्राणी, जो जिन पद अर्घ्य चढ़ाए हैं।।
जो कर्म घातिया नाश करें, वे अर्हत का पद पाते हैं।
शिव पद के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्राँ श्री अरहंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

हम पावन नीर भराए, जलधार कराने लाए।
हो जाए शांति स्थाई, मन में सुधि मेरे आई।।

शांतये शांति धारा.....

सुरभित ये पुष्प मँगाए, हम पुष्पांजलि को आए।
यह जीवन हो सुखकारी, शिव पद पाएँ मनहारी।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....

प्रथम वलयः

दोहा– **अनन्त चतुष्टय प्राप्त जिन, बनें श्री के नाथ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, झुका चरण में माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के द्रव्य चराचर, एक साथ ही जान रहे।
गुण पर्याय सहित द्रव्यों को, समीचीन पहचान रहे।।

ज्ञान अनंतानंत प्राप्त कर, केवल ज्ञानी कहलाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए॥1॥

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण प्राप्ताय सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन प्रगटाया।
दिव्य देशना द्वारा जग में, सर्वलोक को दर्शाया॥
पाए दर्श अनंत श्री जिन, ज्ञाता दृष्टा कहलाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए॥2॥

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुण प्राप्ताय सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय कर्मों को नाशा, सुख अनंत को पाया है।
नश्वर सुख को त्याग प्रभु ने, शाश्वत् सुख उपजाया है॥
पाए सौख्य अनंत श्री जिन, केवल ज्ञानी कहलाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए॥3॥

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण प्राप्ताय सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नाशकर अंतराय जिन, आतम शौर्य जगाये हैं।
आतम की शक्ती खोई थी, उसको प्रभुजी पाये हैं॥
पाए वीर्य अनंत श्री जिन, तीर्थंकर पदवी पाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए॥4॥

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण प्राप्ताय सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय पाके प्रभु ने, आतम को चमकाया है।
विशद मोक्ष के राही बनकर, शिवपदवी को पाया है॥
पाए वीर्य अनंत श्री जिन, तीर्थंकर पदवी पाए।
गुण अनंत के धारी जिन पद, वंदन करने हम आए॥5॥

ॐ ह्रीं अनंत चतुष्टय गुण प्राप्ताय सर्वघातिकर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठीभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **काल अनादि अनन्त हैं, जिन अर्हन्त त्रिकाल।**
अर्हत् पद पाने विशद, गाते हम जयमाल॥

(नरेन्द्र छन्द)

केवल ज्ञानी हुए जिनेश्वर, तीर्थंकर पद धारी।
समवशरण में आप विराजे, जग के करुणाकारी॥
सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाए।
जिसके फल से तीर्थंकर पद, पुण्योदय से पाए॥1॥
प्रभू जन्म लेते दश अतिशय, मंगलमय प्रगटाते।
केवल ज्ञान प्राप्त करते ही, दश अतिशय शुभ पाते॥
चौदह अतिशय कहे देवकृत, हे जिन! तुमने पाए।
इस प्रकार चौंतिस अतिशय के, धारी जिन कहलाए॥2॥
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य सुख, के धारी जिन गाए।
महिमा शाली प्रतिहार्य जिन, मंगलकारी पाए॥
तरु अशोक है शोक निवारी, जिनवाणी यह गाए।
रत्न जड़ित सिंहासन अनुपम, सुन्दर शोभा पाए॥3॥
परम प्रकाशित भामण्डल शुभ, अति आभा बिखराए।
तीन लोक के नाथ कहाते, छत्र त्रय दिखलाए॥
चौंसठ चँवर ढुरें प्रभु आगे, चौंसठ ऋद्धी धारी।
दिव्य ध्वनि खिरती है प्रभु की, पावन जन मनहारी॥4॥
सुरगण महा प्रफुल्लित होकर, पुष्प गगन बरसाते।
मोह नींद से जागो प्राणी, दुन्दुभि देव बजाते॥
प्रभु अचिन्त्य वैभव से मण्डित, तीन लोक में वन्दित।
भव्य जीव जिन दर्शन करते, हो जाते आनन्दित॥5॥
नाथ अभी तक भेद ज्ञान बिन, जड़ वस्तू हम चाही।
शरण आपकी पाकर हम भी, बने मोक्ष के राही॥
दर्श किया है जबसे हमने, नजर अन्य ना टिकती।
नेत्र खुलें या बन्द रहें प्रभु, मूर्ति आपकी दिखती॥6॥

महिमा बाह्य विभव की अनुपम, आत्म विभव क्या कहना।
यही भावना जगी हृदय तव, चरण शरण में रहना॥
हाथ जोड़ हम खड़े द्वार पे, विनती सुनो हमारी।
हम भी मोक्ष महल के स्वामी, बन जाएँ अधिकारी॥7॥

दोहा– **सत्य अहिंसा धर्म के, हो जिनेन्द्र तुम ईश।**
इसी राह पर हम बढ़ें, दो हमको आशीष॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वघाति कर्म विनाशक श्री अर्हन्त परमेष्ठी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **धर्म विभूषित आप हैं, विशद धर्म के ईश।**
भक्ती करते भक्त यह, चरणों में धर शीश॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिक्षिपेत)

श्री सिद्ध परमेष्ठी की पूजा

स्थापना

ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय, मोहनीय का किए विनाश।
आयु नाम अरु गोत्र अन्तराय, आठ कर्म का करके नाश॥
दर्श ज्ञान सुख वीर्य अगुरुलघु, अव्यावाध अरु अवगाहन।
सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त सिद्ध जिन, का हम करते आह्वानन्॥

दोहा– **आत्म सिद्धि करके बने, सिद्ध शिला के ईश।**
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्दः रेखता)

नीर का कलशा लिया भराय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥1॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन लिया घिसाय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥2॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल अक्षत का लिया भराय, प्रभू के पद में दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प हाथों में ले शुभकार, अर्चना करते बारम्बार।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥4॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस नैवेद्य बनाए आज, चढ़ाने लाए हम जिनराज।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥5॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह घी का लिया प्रजाल, वन्दना करते विशद त्रिकाल।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥6॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित लाये धूप महान, नशाएँ आठों कर्म प्रधान।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥7॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ महान, मोक्ष फल पाएँ हम भगवान।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥8॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥9॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शांतये शांति धारा.....

पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

द्वितीय वलयः

दोहा– **अष्ट कर्म का नाश कर, बनते हैं जिन सिद्ध।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाएँ सुपद प्रसिद्ध॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जो ज्ञान सुगुण को ढक लेता, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
इस कारण जीव अनादी से, भव सागर में ही भटक रहा॥
कर ज्ञानावरणी कर्म शमन, प्रभु ज्ञान अनन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्शन गुण का घात करे, वह दर्शन आवरणी जानो।
यह कर्म महा दुखदायी है, इसको भी तुम कम न मानो॥
यह कर्म नाशकर सिद्ध प्रभू, शुभ दर्शानन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख दुख के वेदन का कारण, यह कर्म वेदनीय होता है।
सुख में तो हँसता है लेकिन, दुख आने पर नर रोता है॥
प्रभु कर्म वेदनीय नाश किए, गुण अव्याबाध उपाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह महाबलशाली है, इसने दो रूप बनाए हैं।
दर्शन चरित्र दोनों गुण में, यह अपनी रोक लगाए है॥
प्रभु मोह कर्म का नाश किए, सम्यक्त्व सुगुण प्रगटाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है बन्धन आयू कर्म महा, चारों गतियों में कैद करे।
वह उठा पटक करता रहता, प्राणी की शक्ती पूर्ण हरे॥
प्रभु आयू कर्म विनाश किए, गुण अवगाहन शुभ पाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है शिल्पकार सम नाम कर्म, जो नाना रूप बनाता है।
ज्यों खेल खिलौना पाने को, बालक का मन ललचाता है॥
कर नाम कर्म का नाश प्रभू, सूक्ष्मत्व सुगुण उपजाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥6॥

ॐ ह्रीं अवगाहन गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ऊँच नीच का कारण है, जग में कटुता का काम करे।
जो अरति ईर्ष्या का कारण, जीवों को कष्ट प्रदान करे॥

कर गोत्र कर्म का नाश प्रभु, गुण अगुरुलघु जिन पाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥7॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघु गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कदम कदम पर विघ्न करे, वह अन्तराय दुखदाई है।
शान्ती को क्षीण करे प्रतिपल, यह कर्म की ही प्रभुताई है॥
प्रभु अन्तराय का नाश किए, फिर वीर्यानन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥8॥

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण सहिताय सर्व कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अष्ट गुणों को प्राप्त कर, बने सिद्ध भगवान।**
वह गुण पाने के लिए, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म विनाशक श्री अनन्तान्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **सिद्ध शिला पर जा बसे, बने सिद्ध भगवान।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण॥

(शम्भू छन्द)

जिन सिद्ध अनन्तानन्त कहे, जिनका शिवपुर में वास अहा।
जो जगतपति हैं परमेश्वर, जिनका जग में विश्वास रहा॥
यह लोक अनादी हैं अनन्त, इसका तो कोई अन्त नहीं।
हैं जीव अनन्तानन्त यहाँ, जिनका दिखता न अंत कहीं॥1॥
रहते निगोद में जीव सभी, कई दुख सहकर के आते हैं।
हो जाए निगोद वास पूरण, फिर चतुर्गती भरमाते हैं॥
मानव गति पाना है दुर्लभ, उत्तम कुल पाना सुलभ नहीं।
पंचेन्द्रिय मन पाना दुर्लभ, दुर्लभ जानो श्रद्धान कहीं॥2॥

दुर्लभ शिक्षा दीक्षा पाना, संयम को पाना कठिन रहा।
अतिचार रहित संयम पालन, दुर्लभ से दुर्लभ अति कहा॥
शुभ पंचमहाव्रत गुप्ति त्रय, जो पंच समीति को पाये।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, कर विशद भावना को भाये॥3॥
सर्दी में सरिता के तट पर, चिन्तन में चित्त लगाते हैं।
सम्यक् तप करने हेतू शुभ, गर्मी में गिरि पर जाते हैं॥
वर्षा में वृक्षों के नीचे, निज आतम को ही ध्याते हैं।
सम्यक् त्रय योगों के द्वारा, कर्मों की फौज भगाते हैं॥4॥
जड़ चेतन का अन्तर जिनने, स्पष्ट रूप से जाना है।
चेतन की शक्ती है अनुपम, उसको जिनने पहिचाना है॥
शुभ ध्यान में रहते लीन सदा, आतम की शुद्धी करते हैं।
करते हैं शुद्ध ध्यान अनुपम, कर्मों के निर्झर झरते हैं॥5॥
शुभ धर्म ध्यान में रत रहते, फिर शुक्ल ध्यान प्रगटाते हैं।
उपसर्ग परीषह सहते हैं, निर्ग्रन्थ मार्ग अपनाते हैं॥
फिर क्षायिक श्रेणी पर चढ़कर, निज मोहकर्म का नाश करें।
कर कर्म घातिया नाश पूर्ण, शुभ केवल ज्ञान प्रकाश करें॥6॥
फिर आयु पूर्ण हो जाने पर, कोइ समुद्घात भी करते हैं।
जो रहे अघाती कर्म सभी, वह अन्तरमुहूर्त्त में हरते हैं।
फिर सिद्ध शिला के स्वामी बनकर, ज्ञान शरीरी हों भगवान।
उनके 'विशद' गुणों को पाने, करते हैं हम भी गुणगान॥7॥

दोहा– **सिद्धों की कर वन्दना, प्राणी बनते सिद्ध।**
करते हैं हम अर्चना, जो हैं जगत प्रसिद्ध॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक श्री अनन्तानन्त सिद्ध परिमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **परमेष्ठी जिन सिद्ध का, करते हम गुणगान।**
शीश झुकाते पद युगल, पाने पद निर्वाण॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री आचार्य परमेष्ठी की पूजा

स्थापना

शिक्षा दीक्षा देने वाले, परमेष्ठी आचार्य महान।
शिव पथ के राही बनकर के, करते भव्यों का कल्याण॥
रत्नत्रय को धारण करके, पालन करते पंचाचार।
आह्वानन् आचार्य श्री का, उर में करते मंगलकार॥

ॐ ह्रूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो: अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पद्म नन्दीश्वर छन्द)

जल उत्तम उपमातीत, निर्मल यह लाए।
जन्मादिक रोग अनादि, नशाने को आए॥
गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥1॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु, विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ चन्दन में हे देव, दोष कुगन्ध नहीं।
भव आधि व्याधि से मुक्त, मन में द्वन्द्व नहीं॥
गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥2॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत चिद्रूप महान, धोकर के लाए।
अक्षय ज्ञानादिक प्राप्त, करने हम आए।
गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥3॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्पित गुण गंध मनोज्ञ, वसुधा महकाए।
हम स्वानुभूति की गंध, पाने को आए॥

गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥4॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

निज ज्ञानामृत से तृप्त, हम भी हो जाएँ।
ज्ञाता दृष्टा सुख धाम, अनुपम पद पाएँ॥
गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥5॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

केवल गुण ज्योति प्रकाश, मेरी हो जाए।
हे गुरुवर दीपक श्रेष्ठ, जलाकर के लाए॥
गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥6॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

यह भेद ज्ञान की धूप, अग्नी में खेवें।
कर्मों से मुक्ती शीघ्र, हम भी पा लेवें॥
गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥7॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पुण्य उदय से प्राप्त, करके शिव पाये।
फल यहाँ चढ़ाएँ श्रेष्ठ, चरणों में आये॥
गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥8॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गुण रत्नों की खान, आप कहे स्वामी।
हम अर्घ्य चढ़ाते श्रेष्ठ, बनें गुरु शिवगामी॥
गुरु परमेष्ठी आचार्य, आपके गुण गाते।
दो हमको शुभ आशीष, चरण हम सिरनाते॥9॥

ॐ ह्रूँ आचार्य परमेष्ठिभ्यो: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **सुरभित लेकर नीर यह, देते शांती धार।**
मोक्ष मार्ग में हे गुरू, बनो विशद आधार॥

शांतये शांति धारा.....

पुष्पांजलि को फूल यह, लाए खुशबूदार।
पूजा करते आज हम, पाने भव से पार॥

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत।

तृतीय वलयः

दोहा– **परमेष्ठी आचार्य हैं, पालें पञ्चाचार।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, करने निज उद्धार॥

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जीवादिक तत्त्वों पर करते, दोषरहित जो सद् श्रद्धान।
प्रथम कषाय अनन्तानुबन्धी, करते मिथ्यातम की हान॥
दर्शनाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य॥1॥

ॐ ह्रूँ दर्शनाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संशय और विमोह त्यागकर, करते हैं विभ्रम का नाश।
मिथ्या ज्ञान रहित होकर जो, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश॥
ज्ञानाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य॥2॥

ॐ ह्रूँ ज्ञानाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति पाँच तिय, गुप्ती का पालन करते।
तेरह विधि चारित्र पालते, अतीचार को भी हरते॥
चरित्राचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य॥3॥

ॐ ह्रूँ चारित्राचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनशन आदिक बाह्य सुतप छह, अन्तरंग तप पाल रहे।
द्वादश विधि तप धारण करके, संयम रत्न सम्हाल रहे॥
तपाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य॥4॥

ॐ ह्रूँ तपाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म नाश करने की शक्ती, में वृद्धी नित करते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित तप, के भावों से भरते हैं॥
वीर्याचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य॥5॥

ॐ ह्रूँ वीर्याचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **परमेष्ठी आचार्य जी, पालें पञ्चाचार।**
मोक्ष मार्ग पर बढ़ रहे, बनकर के अनगार॥

ॐ ह्रूँ पंचाचार गुण प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **छत्तिस गुण जो धारते, रहते योग सम्हाल।**
परमेष्ठी आचार्य की, गाते हम जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

पञ्चाचार का पालन करते, शिव पथ गामी जैनाचार्य।
अतः आपके चरणों श्रद्धा, करते हैं इस जग के आर्य॥
परम हितैषी गुरुवर तुमको, अब तक कभी ना ध्याया है।
दर्श किया नयनों से लेकिन, श्रद्धा में ना लाया है॥
हुआ तीव्र मिथ्यात्व उदय तो, गुरु चरणों से दूर रहे।
संतों का उपदेश न भाया, मिथ्या मद से पूर रहे॥
पाप कर्म में लीन रहे अरु, निज स्वभाव को बिसराया।
इसीलिए गुरुवर अनादि से, भवसागर मे भरमाया॥

आज आपके दर्शन करके, मैने निज दर्शन पाया।
परम इष्ट चैतन्य ज्ञान धन, का बहुमान हृदय आया॥
चंचल मन से ध्यान लगाना, काम बड़ा यह वीरों का।
काम नहीं तलवारों का यह, काम नहीं है तीरों का॥
निज वाणी से कुछ ना कहते, जिनवाणी रस पिया करें।
निज आतम से चर्चा करते, प्रतिक्रमण में जिया करें॥
रहें अचेतन तन में लेकिन, कायोत्सर्ग में लीन रहे।
मेरू सम निश्चल रहकर मुनि, प्रत्याख्यान स्वाधीन रहे॥
दो आशीष मुझे हे गुरुवर, विशद सिंधु हे दया निधान।
स्वपर विवेक जगे अंतर में, रत्नत्रय का दो शुभ दान॥
षट् आवश्यक पालक गुरुवर, मेरा भी पालन करिये।
हूँ अबोध मम बाँह गहो गुरु, मुक्ति पुरी संग ले चलिये॥

दोहा– **परमेष्ठी तुम हो गुरू, नमन करो स्वीकार।**
वीतरागता उर भरो, कर दो भव से पार॥

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **गुरूदेव के चरण में, पूरी होगी आस।**
मोक्ष महल को पाएँगे, है पूरा विश्वास॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री उपाध्याय परमेष्ठी की पूजन

स्थापना

रत्नत्रय के धारी मुनिवर, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीण।
पठन और पाठन करने में, नित्य निरन्तर रहते लीन॥
पच्चिस मूल गुणों के धारी, उपाध्याय जी रहे महान।
आह्वानन् कर तिष्ठाएँ उर, पाएँ हम भी सम्यक् ज्ञान॥

ॐ ह्रौं रत्नत्रय धारक श्री उपाध्याय परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तोटक छन्द)

निर्मल जल यह प्रासुक करके, यहाँ चढ़ाने हम लाए।
जन्म मरण का नाश होय मम, विशद भावना यह भाए॥1॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्व. स्वाहा।

मलयागिर का शीतल चंदन, केसर के संग घिस लाए।
भव संताप नाश हो मेरा, विशद भावना हम भाए॥2॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल मनोहर, प्रासुक जल से धो लाए।
अक्षय पद अविनाशी पाएँ, विशद भावना यह भाए॥3॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, कनक थाल में भर लाए।
नशे काम की बाधा मेरी, विशद भावना यह भाए॥4॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

व्यंजन सरस अनेकों खाकर, तृप्त नहीं हम हो पाए।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, विशद भावना यह भाए॥5॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मणिमय दीप जलाकर घी का, यहाँ चढ़ाने हम लाए।
मोह अंध विध्वंस होय अब, विशद भावना यह भाए॥6॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

परम सुगन्धित धूप दशांगी, अग्नी में खेने लाए।
कर्म नाश हो जाएँ सारे, विशद भावना यह भाए॥7॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस कई फल खाकर भी, तृप्त नहीं हम हो पाए।
मोक्ष महाफल पाने की शुभ, विशद भावना यह भाए॥8॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

प्रासुक जल चंदन आदी का, अर्घ्य संजोकर यह लाए।
पद अनर्घ्य पाने की अनुपम, विशद भावना हम भाए॥9॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांती धारा दे रहे, पाने पद निर्वाण।
ज्ञान ध्यान तप से तपे, विशद गुणों की खान॥

शांतये शांति धारा.....

बहुश्रत भक्ती भावना, धारी गुरू उवज्झाय।
पुष्पांजलि करते विशद, पूंजे मन-वच-काय॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चतुर्थ वलयः

दोहा– **उपाध्याय परमेष्ठी हैं, पावन परम पुनीत।**
पुष्पांजलि कर पूजते, बनो हमारे मीत॥

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचारांग आदि एकादश, दृष्टिवाद भी अंग महान्।
अंग प्रविष्ठी के ज्ञाता का, करते भाव सहित गुणगान॥
उपाध्याय परमेष्ठी पावन, ज्ञान ध्यान तप करते घोर।
अर्घ्य चढ़ा पूजा हम करते, उनकी होकर भाव विभोर॥1॥

ॐ ह्रौं आचारांगादि गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंग बाह्य के भेद अनेकों, जिनका पाते सम्यक् ज्ञान।
भवि जीवों को करुणाकारी, होकर करते ज्ञान प्रदान॥
उपाध्याय परमेष्ठी पावन, ज्ञान ध्यान तप करते घोर।
अर्घ्य चढ़ा पूजा हम करते, उनकी होकर भाव विभोर॥2॥

ॐ ह्रौं अंग बाह्य ज्ञान गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **उपाध्याय मुनिराज की, करें वन्दना लोग।**
सम्यक् ज्ञानी बन सभी, पावें सुख संयोग॥३॥

ॐ ह्रौं अंग बाह्य अंग प्रविष्टि ज्ञान गुण प्राप्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **ज्ञान प्राप्त करते सभी, जिनसे बालाबाल।**
उपाध्याय की हम यहाँ, गाते शुभ जयमाल॥

(पद्धडि छन्द)

जय उपाध्याय मुनिवर महान्, जय ज्ञान ध्यान चारित्रवान।
जय नग्न दिगम्बर रूप धार, शुभ वीतराग मय निर्विकार॥
जय मिथ्यातम नाशक मुनीश, तव चरण झुकावे शीश ईश।
जय आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान हीन, जय धर्म शुक्ल में हुए लीन॥
जय मोह सुभट का नाश कीन, जय आत्म ज्ञान गत गुण प्रवीण।
जय आतापन आदिक योग धार, जो करते हैं निज में विहार॥
जय सम्यक् दर्शन ज्ञान पाय, जय सम्यक् चारित उर बसाय।
जय विषय भोग का कर विनाश, जय त्याग किए सब जगत आश॥
जय विद्वत रत्न कहे मुनीश, कई भक्त झुकाते चरण शीश।
नित प्राप्त करें सम्यक् सुज्ञान, शिष्यों को दें सद् ज्ञान दान॥
जय करें जगत कुज्ञान नाश, जय करें धर्म का सद् प्रकाश।
जय काम कषाएँ किए क्षीण, जय तत्त्व देशना में प्रवीण॥
जय अंग सु एकादश प्रमाण, जय चौदह पूरब लिए जान।
हो गये आप इनके सुनाथ, तव चरण झुकावें भक्त माथ॥
जय धर्म अहिंसा लिए धार, जय गमन करें पग-पग विचार।
जय सौम्य मूर्ति हैं परम शांत, मुद्रा दिखती है अति प्रशांत॥
जय गुण गरिमा जग है प्रधान, जय भव्य भ्रमर तव करें जाप॥
जय-जय करुणाकर कृपावन्त, तब भक्त जगत् में सकल संत।
आध्यात्म रसिक हो सुगुण खान, जय ज्ञानामृत का करें पान॥
तुम 'विशद' सुगुण जग में अपार, तव चरणों करते नमस्कार।
हमको गुरु भव से करो पार, हमको भी दो गुरु तत्त्व सार॥

(छन्द घत्तानन्द)

जय सम्यक् ज्ञानी, विद्या दानी, उपाध्याय के गुण गाएँ।
भव ताप निवारी, बहुगुण धारी, ज्ञान पुजारी को ध्याएँ॥

ॐ ह्रौं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– उपाध्याय को पूजकर, पाते ज्ञान निधान।
सुख शांती को प्राप्त कर, पाएँ पद निर्वाण॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री साधु परमेष्ठी की पूजन

स्थापना

रत्नत्रय को पाने वाले, करते निज आतम का ध्यान।
विषय कषायों को तज करके, पावें सम्यक् ज्ञान महान्॥
लक्ष्य बनाया मुक्ती पथ का, करते निज आतम कल्याण।
ऐसे परम दिगम्बर साधू, का हम करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज–माता तू दया करके.....

जन्मादी रोग मिटे, जल चरण चढ़ाते हैं।
लाकर श्रद्धा का जल, त्रय धार कराते हैं॥
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥1॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन का लेप किया, पर राग ना मिट पाया।
यह दास चरण में अब, प्रभु भक्त बना आया॥

हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥2॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के पद अस्थिर हैं, क्षण भँगुर नश जाते
तव पूजा करते जो, वह अक्षय पद पाते
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥3॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के तरु पे, निज ज्ञान सुमन खिलते।
शुभ ज्ञान सुरभि पाने, आकर के भवि मिलते॥
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥4॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर एकाहारी, स्थिर आहार करें।
शरणागत का पल में, गुरुवर उद्धार करें॥
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥5॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य गगन में शुभ, रवि ज्ञान चमकता है।
मोहान्ध महानाशी, शुभ दीप दमकता है॥
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥6॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोह अन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ती ने, हे नाथ सताया है।
बल है अनन्त मेरा, ना ज्ञान में आया है॥
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥7॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव फल के दाता तुम, हे नाथ कहाते हो।
आनन्द का शुभ निर्झर, गुरु आप बहाते हो॥
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥8॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की चाहत में, सदियों से दुःख सहे।
ना पद अनर्घ्य पाया, भटकाते सतत रहे॥
हम भक्त आपके हैं, चरणों सिरनाते हैं।
तव गुण हम भी पाएँ, यह भाव बनाते हैं॥9॥

ॐ ह्रः अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्व साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता भावी बन स्वयं, देते शान्ते धार।
शान्तिधारा कर विशद, हो जाये भवपार॥

शांतये शांति धारा.....

चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।
मुक्ति पाने को 'विशद', करते चरण प्रणाम॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पंचम वलयः

दोहा– **साधू परमेष्ठी कहे, संगारम्भ विहीन।**
पुष्पांजलि करते चरण, भक्ती में हो लीन॥

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

हिंसा झूठ चोरी कुशील अरु, बाह्य परिग्रह करते त्याग।
जो व्यवहार चारित्र पालते, महाव्रतों में धर अनुराग॥
समता भाव धारने वाले, शिव पथ के राही अनगार।
अर्घ्य चढ़ा हम वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥1॥

ॐ ह्रः व्यवहार चारित्र प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आतम ही सम्यक् दर्शन है, आतम ही है सम्यक्ज्ञान।
आतम ही सम्यक् चारित है, आतम वीतराग विज्ञान॥
निश्चय चारित पाने वाले, शिव पथ के राही अनगार।
अर्घ्य चढ़ा हम वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रः निश्चय चारित्र प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **चारित के दो भेद हैं, निश्चय अरु व्यवहार।**
पालन करके साधना, करे संत अनगार॥

ॐ ह्रः निश्चय व्यवहार चारित्र प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **संयम के धारी चलें, ईर्यापथ की चाल।**
जिन साधू निर्ग्रन्थ की, गाते हम जयमाल॥

(चौपाई)

रत्नत्रय धारो हे प्राणी, है विराग की यही निशानी।
पञ्च महाव्रत धारें ज्ञानी, पञ्च समीति धर विज्ञानी॥
पञ्चेन्द्रिय जय करके भाई, आवश्यक पाले सुखदायी।
सप्त शेष गुण के भी धारी, मुनिवर होते हैं अनगारी॥
दशों दिशाएँ जिनकी अम्बर, नहीं साथ कुछ भी आडम्बर।
मुक्ती पथ के हैं जो राही, परम दिगम्बर मुद्रा शाही॥
ग्रीष्म ऋतु पर्वत पर स्वामी, ध्यान लगाते शिवपथगामी।
शीत में सरिता तट पर जाते, ध्यान में अपना समय बिताते॥

वर्षा ऋतु तरुतल में भाई, आत्म ध्यान करते शिवदायी।
द्वादश तप जो तपने वाले, साधू जग में रहे निराले॥
ऋद्धीधारी ऋषी कहाते, मौन रहें मुनिवर कहलाते।
शिव का यत्न करें यति भाई, संग रहित अनगार कहाई॥
संघ चतुर्विध ऐसा जानो, व्रत धारी होता है मानो।
मुनी आर्यिका श्रावक भाई, और श्राविकाएँ कहलाईं॥
मुनिव्रत धार नहीं जो पावें, वह श्रावक के व्रत अपनावें।
देव-शास्त्र-गुरु के श्रद्धानी, वैय्यावृत्ती करते ज्ञानी॥
कर्त्तव्यों का पालन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते।
साधु समाधि के अनुरागी, हो जाते प्राणी बड़भागी॥
योगी साधु समाधि पाते, हम भी विशद भावना भाते।
साधु शरण को हम भी पाएँ, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ॥
पावन रत्नत्रय को पाएँ, शिव के हम राही बन जाएँ।
होय भावना पूर्ण हमारी, हे जिन तीन भुवन के धारी॥

दोहा– **साधू चारित पालते, निश्चय अरु व्यवहार।**
शिवपथ राही जीव को, बनें श्रेष्ठ आधार॥

ॐ ह्: अष्टाविंशति मूलगुण प्राप्त श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **करें साधना लोक में, संयम धर अनगार**
जो उनकी सेवा करें, उनका हो उद्धार॥

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री जिनधर्म पूजन

स्थापना

'वत्थु सहावो धम्मो' भाई, शास्त्रों में बतलाया है।
रत्नत्रय शुभ धर्म कहा है, मोक्ष का कारण गाया है॥

उत्तम क्षमा आदि दश होते, शिव पथ के अनुपम सोपान।
परम अहिंसामयी धरम का, करते हम उर में आह्वान॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्म अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सुखमा छन्द)

जन्मादिक सब रोग नशाएँ, निर्मल यह शुभ नीर चढ़ाएँ।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सन्ताप मेरा नश जाए, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाने लाए।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद हमको मिल जाए, अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

काम नाश करने हम आए, सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

व्याधी क्षुधा नशाने आए, शुभ नैवेद्य चढ़ाने लाए।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह अंध मेरा नश जाए, मणिमय दीप जलाकर लाए।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म नशाने आए, सुरभित धूप जलाने लाए।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महाफल हम पा जाएँ, सरस श्रेष्ठ फल यहाँ चढ़ाएँ।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पद अनर्घ पाने हम आए, अर्घ्य चढ़ाने को हम लाए।
जैन धर्म पाएँ शुभकारी, जीवन हो मम मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जिनधर्मेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुखी रहें जग जीव सब, जैन धर्म को धार।
शिव पद पाने के लिए, देते शान्तिधार।।

शांतये शांति धारा.....

मोहित करते जीव को, सुरभित सुन्दर फूल।
पुष्पांजलि जो भी करें, नशे कर्म की मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

षष्ठम वलयः

दोहा– **मंगलमय जिन धर्म की, महिमा रही अपार।**
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, पाने शिव दरबार॥

(इति षष्ठम् वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

औपशमिक क्षायिक क्षायोपशम, सम्यक् दर्शन तीन प्रकार।
अविरत देशव्रती पाते हैं, और प्राप्त करते अनगार॥
सम्यक् दर्शन धर्म जीव का, करता है भव से उद्धार।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजा करते, पाने भव सिन्धू से पार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् दर्शन गुणोपेत जिन धर्मेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति श्रुत अवधि मनः पर्यय शुभ, क्षायिक होता केवल ज्ञान।
वस्तु स्वरूप बताने वाला, करने वाला जग कल्याण॥
सम्यक् ज्ञान है धर्म जीव का, करता है भव से उद्धार।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजा करते, पाने भव सिन्धू से पार॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् ज्ञान गुणोपेत जिन धर्मेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादिक पाँचों पापों से, हो जाएँ जो जीव विरक्त।
इन्द्रिय मन पर विजय प्राप्त कर, बनें देव आगम गुरुभक्त॥
सम्यक् चारित धर्म जीव का, करता है भव से उद्धार।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजा करते, पाने भव सिन्धू से पार॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् चारित्र गुणोपेत जिन धर्मेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **सम्यक् दर्शन ज्ञान शुभ, सम्यक् चारित धार।**
रत्नत्रय की नाव पर, होते भव्य सवार॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र गुणोपेत जिन धर्मेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **रत्नत्रय को धारकर, होंगे मालामाल।**
जैन धर्म की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

जैन धर्म जग के जीवों का, निष्कारण बन्धू जानो।
सर्व धर्म सौहार्द प्रदायक, सारे जग में पहिचानो॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, धर्म के ईश्वर धर्म कहे।
और शेष जो रहे जगत् में, वह तो सभी अधर्म रहे॥1॥

जैन धर्म जग के जीवों को, सर्व पाप से मुक्त करे।
भव दुःखों से मुक्त कराए, मोक्ष सुखों में आन धरे॥

बनता नहीं नपुंसक स्त्री, नरक पशू में न जावे।
विकृत अल्प आयु न होवे, नहीं नीच कुल भी पावे।।2।।
दीन दरिद्री बने नहीं वह, जैन धर्म को जो धारे।
विजय श्री को प्राप्त करे वह, रण में कभी नहीं हारे।।
ओजवान तेजस्वी होकर, विद्याओं का हो स्वामी।
शूर-वीर हो सारे जग में, वृद्धीकर यश हो नामी।।3।।
अतिशय कारी वैभव पाये, हो जाये जग में नर नाथ।
सर्व जहाँ के सारे प्राणी, घूमें आगे-पीछे साथ।।
करता सत पुरुषार्थ महाकुल, पाकर बनता है नर इन्द्र
अष्ट गुणों का स्वामी होकर, स्वर्गों में बन जाए सुरेन्द्र।।4।।
देव-देवियों की परिषद में, करता है चिरकाल रमण।
सुन्दर तन-मन-वैभव पाकर, जीवन बनता पूर्ण चमन।।
छह खण्डों के अधिपति बनके, चक्ररत्न के हों स्वामी।
अनुक्रम से तीर्थंकर बनते बनते मुक्ती पथ गामी।।5।।
अष्ट कर्म से मुक्ति पाकर, अजर-अमर पद पाते हैं।
पा लेते हैं सुख अनन्त फिर, लौट कभी न आते हैं।।
ऐसा पावन पद पाने को, मेरा मन ललचाया है।
तज कर जग के धर्म पन्थ सब, जैन धर्म अपनाया है।।6।।
'विशद' धर्म की महिमा भाई, सारे जग ने गाई है।
धारण किया धर्म यह जिसने, उसने मुक्ती पाई है।।
जैन धर्म के द्वारा हम भी, जग से मुक्ती पाएँगे।
निज वैभव को पाकर भाई, उसमें ही रम जाएँगे।।7।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय परम विशाला, जग में आला, जैन धर्म धन हम पावें।
हम पूजे ध्यावें, बहुगुण गावें, कर्म नाश शिवपुर जावें।।

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रय स्वरूप परम वीतरागमय जैन धर्मेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रत्नत्रय शुभ धर्म की, महिमा अगम अपार।
भाव सहित धारण करे, हो जावे भव पार।।

इत्याशीर्वादः

श्री जैनागम पूजा

स्थापना

तीर्थंकर की वाणी है जो, ॐकार मय किया कथन।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह का, जिसमें किया गया वर्णन।।
अनेकांत अरु स्यादवाद मय, जैनागम है महति महान।
विशद हृदय के आसन पर हम, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं जिनेन्द्र कथित गणधरदेव रचित जिनागम अशेष ज्ञान सम्पूर्ण आगम अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(नरेन्द्र छन्द)

निर्मल वचन न निर्मल मन है, निर्मल न मम काया है।
आतम स्वच्छ नहीं हो पाई, पाप कर्म की माया है।।
यह निर्मल प्रासुक जल अनुपम, आत्म शुद्धि को लाए हैं।
हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बचपन क्रीड़ा में गुजर गया, विषयों में गई जवानी है।
भौंरा सम भ्रमण किया जग में, आगम की सीख न मानी है।।
अब चन्दन घिसकर के सुरभित, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पद के मद ने मदहोश किया, माया ने मन को ललचाया।
चिन्ता ने चिता बना डाला, न अक्षय पद हमने पाया।।
अक्षत यह श्रेष्ठ धवल अतिशय, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सौन्दर्य लुभाता जीवों को, मन काम वासना में भटके।
विषयों की आशा में फँसकर, कर्मों के फंदे में लटके।।
यह पुष्प श्रेष्ठ अनुपम सुरभित, हम आत्मशुद्धि को लाए हैं।
हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना रस की लोलुपता में, मन को व्याकुल कर देती है।
जब क्षुधा सताती प्राणी को, बुद्धी उसकी हर लेती है।।
यह सरस शुद्ध व्यंजन घृत के, हम आत्म शुद्धि को लाए है।
हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया है मोह का अँधियारा, उसमें अनादि से भरमाया।
बाहर के दीप जलाए कई, ना ज्ञान का दीपक प्रजलाया।।
यह दीप जलाकर रत्नमयी, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से नाता जोड़ा है, कर्मों ने हमको उलझाया।
हम फँसे भँवर में कर्मों के, निष्कर्मभाव न मन भाया।।
यह धूप दशांगी अग्नि में, हम खेने हेतु लाए हैं।

हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल मन को तृप्त करें, मुक्ती फल की क्या बात अहा।
जो सिद्धी तुमने पाई है वह, पाना मेरा लक्ष्य रहा।।
श्री फल आदि, कई ताजे फल, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग वैभव को अपना कहकर, जीवन यह जग में उलझाया।
जब कर्म उदय में आता तो, न साथ कोई देने आया।।
यह अर्घ्य बनाया शुभ अनुपम, हम यहाँ चढ़ाने लाये हैं।
हम जैनागम की पूजाकर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होता है जल का सदा, शीतल श्रेष्ठ स्वभाव।
भव सिन्धु से पार हो, मेरी भी अब नाव।।

शांतये शांति धारा.....

जिनवाणी जिन भारती, तुमको करूँ प्रणाम।
जैनागम को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सप्तम वलयः

दोहा– **जिन श्रुत के बतलाए हैं, श्रेष्ठ चार अनुयोग।**
पढ़ के नर ज्ञानी बनें, करें श्री का भोग।।

(इति सप्तम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथमानुयोग में पुण्य पुरुष की, जीवन गाथा का वर्णन।
बोधि समाधी का निधान है, अरु पुराण का श्रेष्ठ कथन॥
जैनागम का करते हैं हम, भाव सहित सम्यक् अर्चन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते भाव सहित वन्दन॥1॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्रथमानुयोग रूप श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपद लोकालोक झलकता, चतुर्गति का शुभ वर्णन।
करणानुयोग शास्त्र का करते, करण-चरण द्वारा वन्दन॥
जैनागम का करते हैं हम, भाव सहित सम्यक अर्चन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते भाव सहित वन्दन॥2॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि करणानुयोग रूप श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी और श्रावक की चर्या, का जिससे होता है ज्ञान।
चरणानुयोग शुभ कहा गया वह, जो है वीतराग विज्ञान॥
जैनागम का करते हैं हम, भाव सहित सम्यक अर्चन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते भाव सहित वन्दन॥3॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि चरणानुयोग रूप श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवाजीव सुतत्त्व कहें हैं, बन्ध मोक्ष सु पुण्य अरु पाप।
द्रव्यानुयोग शास्त्र के द्वारा, इनको जान लीजिए आप॥
जैनागम का करते हैं हम, भाव सहित सम्यक् अर्चन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते भाव सहित वन्दन॥4॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि द्रव्यानुयोग रूप श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य देशना श्री जिनेन्द्र की, चऊ अनुयोगों रूप कही।
प्रथमानुयोग शुभ करण चरण अरु, द्रव्यानुयोग स्वरूप रही॥

जैनागम का करते हैं हम, भाव सहित सम्यक् अर्चन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते भाव सहित वन्दन॥5॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि चऊ अनुयोग रूप श्रुतज्ञानेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **श्रुताभ्यास से जीव के, कटे कर्म का जाल।**
जैनागम की अब यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

एक क्षेत्र में तीर्थंकर जिन, एक काल में होते एक।
ऋषभनाथ से महावीर तक, केवल ज्ञानी हुए अनेक॥
खिरती दिव्य देशना पावन, ॐकार मय दिव्य अनूप।
अनक्षरी होकर अक्षरमय, जीव समझते निज अनुरूप॥1॥
सर्व महा भाषा अष्टादश, सात शतक भाषाएँ शेष।
अर्ध मागधी भाषा में हो, श्री जिनवाणी का उपदेश॥
छह-छह घड़ी दिव्य ध्वनि द्वारा, तीन काल में हो उपदेश।
भव्य जीव के पुण्य योग से, असमय में भी होय विशेष॥2॥
केवल ज्ञानी को होता है, अक्षय केवल ज्ञान अनन्त।
दिव्य देशना में खिरता है, उस अनन्त का भाग अनन्त॥
दिव्य ध्वनि में जितना खिरता, गणधर झेल पाएँ कुछ अंश।
गणधर ने जितना झेला है, उसका रच पाते कुछ अंश॥3॥
महावीर का शासन है यह, उनकी वाणी का है ज्ञान।
गौतम स्वामी ने झेली है, दिव्य देशना सह सम्मान॥
मोक्ष गमन पर महावीर के, गौतम ने कीन्हा उपदेश।
बारह बारह वर्ष सुधर्माचार्य, ने दीन्हा शुभ-संदेश॥4॥
अंग पूर्व धारी मुनियों का, बाद में इसके हुआ वियोग।
एक अंग के कुछ अंशों का, कुछ संतों ने पाया योग॥
कुन्द-कुन्द धरसेन गुरू अरु, पुष्पदन्त श्री भूतबली।
आगम के ज्ञाता संतों से, श्रुत की धारा अग्र चली॥5॥

मंगलमय जिनवाणी माता, जीवन मंगलमय कर दो।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, हृदय सुघट मेरा भर दो॥
दो हमको आशीष हे माता!, उर में भरों भेद विज्ञान।
स्वपर भेद विज्ञान के द्वारा, विशद ज्ञान से हो कल्याण॥6॥

(छन्द घत्तानन्द)

जय जय जिन चंदा आनन्दकन्दा, दिव्य ध्वनि तव पावन है।
जय श्रुतस्कन्धा सुगुण अनन्ता, श्रुत ज्ञान मन भावन है॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखाद्भूत दिव्यध्वनि सम्पन्न सम्पूर्ण परम श्रुतज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जिनवाणी को पूजकर, हृदय जग श्रद्धान्।**
अष्ट कर्म का नाश कर, पाऊँ केवल ज्ञान॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री जिन चैत्य पूजन

स्थापना

अकृत्रिम जिन चैत्य कहे हैं, तीन लोक में महति महान्।
कृत्रिम जिनबिम्बों का भी हम, करते भाव सहित आह्वान्॥
हे नाथ हमारे अन्दर में, आकर के अब प्रभु वास करो।
जो छाया मेरे जीवन में, हे जिन! वह कल्मश पूर्ण हरो॥

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ताटंक छन्द)

सद् श्रद्धा की सरिता का जल, त्रिविध व्याधियाँ नाश करे।
शास्वत ज्ञान स्वभाव आतमा, निज में शीघ्र प्रकाश करे॥
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा के उपवन को, चन्दन शीतल शान्त करे।
भवाताप की ज्वाला क्षण में, आतम को उपशांत करे॥
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है॥2॥

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सद् श्रद्धा के अक्षय अक्षत, लेकर प्रभु गुणगान करें।
काल अनादी भव बाधा हर, अक्षय सुपद प्रदान करें॥
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है॥3॥

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा के गुलशन से, सुरभित पुष्प मँगाए हैं।
काम व्याधि क्षय करने को हम, प्रभु पद में सिरनाए हैं॥
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है॥4॥

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रुचि के सुचरु प्राप्त कर, निज गुण अपने प्रगटाएँ।
क्षुधा रोग क्षय करके हे जिन!, आतम में तृप्ती पाएँ॥
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है॥5॥

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन के गुण दीपों, से दीपावलि सजवाएँ।
दर्शन मोह नाश करके हम, सुखानन्त में रम जाएँ।।
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान की अग्नी में हम, अष्ट कर्म को विनशाएँ।
नित्य निरञ्जन शुद्ध स्वभावी, निज स्वरूप को प्रगटाएँ।।
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा के सुरतरु से, सरस श्रेष्ठ फल हम लाएँ।
महामोक्ष फल पाने को हम, पूजा करके हर्षाए।।
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट सुगुण का अष्ट द्रव्य से, अर्घ्य बना जिन गुण गाएँ।
पद अनर्घ्य शास्वत प्रगटाने, पूजा करने पद आएँ।।
श्री जिनेन्द्र के चैत्य की अर्चा, जग में मंगलकारी है।
परम पूज्य तीर्थेश चरण में, सविनय ढोक हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**चैत्य की पूजन से मिले, गुण अनन्त भण्डार।**
विशद योग से हम यहाँ, देते शांती धार।।

शांतये शांति धारा.....

दोहा–**दोषों के हम कोष हैं, अल्प मती हे नाथ।**
फिर भी अर्चा कर रहे, पुष्पाञ्जलि ले हाथ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अष्टम वलयः

दोहा– **कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य पद, वन्दन बारम्बार।**
पुष्पांजलि करते शुभम्, हे जग के आधार।

(इति अष्टम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आठ अरब तैंतीस कोटि अरु, लाख छियत्तर रहीं महान्।
अधोलोक में जिन प्रतिमाएँ, जिनका हम करते गुणगान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते यहाँ त्रिकाल।
बनें मोक्ष पथ के राही हम, चरण पड़े सब बालाबाल।।1।।

ॐ ह्रीं अधो लोके अष्टारब त्रयश्त्रिंशद् कोटि षट् सप्तति लक्ष अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमाएँ सहस उनन्चास, सात सौ चौंसठ मंगलकार।
मध्य लोक में अकृत्रिम हैं, कृत्रिम रहे अनेक प्रकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते यहाँ त्रिकाल।
बनें मोक्ष पथ के राही हम, चरण पड़े सब बालाबाल।।2।।

ॐ ह्रीं नव चत्त्वारिंशद सहस्र सप्त शत चतुः षष्ठि अकृत्रिम एवं कृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि इकानवे लाख छियत्तर, सहस अठत्तर अरु सौ चार।
अधिक चौरासी जिन प्रतिमाएँ, ऊर्ध्व लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते यहाँ त्रिकाल।
बनें मोक्ष पथ के राही हम, चरण पड़े सब बालाबाल।।3।।

ॐ ह्रीं एक नवति कोटि षट् सप्तति लक्ष अष्ट सप्तति चतुशत चतुराशीति अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमाएँ कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक में हैं अविकार।
वीतरागता जो दर्शाएँ, महिमा जिनकी अपरम्पार।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते यहाँ त्रिकाल।
बनें मोक्ष पथ के राही हम, चरण पड़े सब बालाबाल॥4॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व अधोमध्य लोक स्थित कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **जिन का शासन है जहाँ, रहता वहाँ सुकाल।**
श्री जिन चैत्यों की यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

(पद्धरिछन्द)

जय जय जिनवर श्री वीतराग, जिनके ना होता जरा राग।
जय जय श्री जिनके चैत्य जान, निर्ग्रन्थ बताए हैं महान्॥
जय जय अकृत्रिम हैं प्रधान, जय रत्नमयी हैं शोभमान।
जय समचतुष्क संस्थान पाय, अतिशय सुन्दर स्वरूप गाय॥
जय ध्यान लीन सोहें विशेष, दोनों आसन में हों जिनेश।
नाशाग्र दृष्टि है ना विकार, जिनकी महिमा का नहीं पार॥
लगता ज्यों बैठे ध्यान लीन, हैं सर्व परिग्रह से विहीन।
सिंहासन सोहे अति महान, जिनके ऊपर जिन विद्यमान॥
जिन बिम्बों की शोभा अपार, जो पूर्ण रूप हैं निर्विकार।
वैडूर्यमणी के बने केश, हैं दंत वज्रमय शुभ विशेष॥
बतलाए ओष्ठ मूंगे समान, कोंपल सम पग कर हैं महान।
दशताल प्रमित लक्षण विशेष, मानो हमको वह रहे देख॥
हैं उच्च पाँच सौ धनुष देव, पद्मासन् में सोहें सदैव॥
बत्तीस युगल में यक्ष आन, शुभ चँवर ढौरते हैं महान्।
श्री देवी श्रुतदेवी विचार, सर्वाण्ह यक्ष अरु सनत कुमार॥
इनकी भी मूर्ति रहीं पास, जो दोय पार्श्व में करें वास।
हैं अष्ट द्रव्य महामंगलीक, अत्यन्त रहे जो शोभनीक॥
हैं चैत्य सुकृत्रिम भी महान, जिनकी होती है अलग शान।

जो उपल धातु के हों प्रधान, शुभरत्नमयी भी रहे जान।
जिन चैत्यों का जो करें दर्श, भव्यों के मन में बढ़े हर्ष॥
प्राणी प्रगटावें ज्ञानभान, रत्नत्रय पायें जो महान।
हमको मिल जाए मोक्ष पंथ, पा जाएँ भव का विशद अंत॥

(छन्द घत्तानंद)

जय कृत्रिमाकृत्रिमा, श्री जिन प्रतिमा, को वंदन है भाव भरा।
श्री जिन गुणगाया, पूज रचाया, उनके चरणों शीश धरा॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम चैत्यालयस्थ जिनबिम्ब समूहेभ्यों पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जिन बिम्बों की लोक में, महिमा है शुभकार।**
चरण वन्दना जो करें, वे भी हों अविकार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री जिन चैत्यालय पूजन

स्थापना

ऊर्ध्व अधो अरु मध्यलोक में, श्री जिनेन्द्र के चैत्यालय।
रत्नमयी अकृत्रिम शाश्वत, शोभा पाते मंगलमय॥
आठ करोड़ लाख छप्पन हैं, सहस सत्तानवे अरु सौ चार।
इक्यासी अकृत्रिम कृत्रिम, का आह्वानन् बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक-वर्ति कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

निर्मल नीर की भर के झारी, चढ़ा रहे हम हे त्रिपुरारी।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन घिसकर लाए, भव संताप नशाने आए।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह संसार ताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत से सुभकारी, पूजा करते हम मनहारी।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, भव से मुक्ती पाने आए।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिमा जिन चैत्यालय समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाते मंगलकारी, मोह तिमिर के नाशनकारी।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्यालय समूह अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे चढ़ा रहे फल भाई, मुक्ती पद दायक सुखदायी।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिमा जिन चैत्यालय समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह मनहारी, पद अनर्घ दायक शिवकारी।
चैत्यालय हम जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा-कृत्रिमा जिन चैत्यालय समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–परम सुगन्धित नीर से, करते शान्तीधार।
सुख शान्ती आनन्द हो, शान्ती मिले अपार॥

शांतये शांति धारा.....

दोहा–श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प यह, लेकर दोनों हाथ।
पुष्पांजलि करते परम, पाने शिवपद नाथ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नवम वलयः

दोहा– **अकृत्रिम कृत्रिम सभी, चैत्यालय शुभकार।**
उनकी पूजा हेतु है, पुष्पांजलि मनहार॥

(इति नवम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक के चैत्यालय।
भावन व्यन्तर के भवनों में, शास्वत गाये मंगलमय॥
भक्ति भाव से अर्चा करके, सादर शीश झुकाते हैं।
भव्य जीव वह अल्प समय में, मोक्ष महाफल पाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अधोलोके सप्त कोटि द्वय सप्तति अकृत्रिम जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार सौ अट्ठावन चैत्यालय, मध्यलोक में रहे महान।
अकृत्रिम कृत्रिम हैं जितने, उनका हम करते गुणगान॥
भक्ति भाव से अर्चा करके, सादर शीश झुकाते हैं।
भव्य जीव वह अल्प समय में, मोक्ष महाफल पाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं मध्य लोके चतुःशत् अष्ट पंचाशत अकृत्रिम एवं कृत्रिम जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख चौरासी सहस सत्तानवे, और तेइस हैं श्री जिन धाम।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह शास्वत, जिनको मेरा विशद प्रणाम॥
भक्ति भाव से अर्चा करके, सादर शीश झुकाते हैं।
भव्य जीव वह अल्प समय में, मोक्ष महाफल पाते हैं।3॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोके चतुः अशीति लक्ष सप्त नवति सहस् त्रयविंशति जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **तीनों लोकों में रहे, अकृत्रिम जिनधाम।**
भव्य जीव करते सभी, जिनको सदा प्रणाम॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम जिनालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **जिन भक्ती इस लोक में, है कर्मों की काल।**
जिन चैत्यालय की यहाँ, गायें हम जयमाल॥

(पद्धरिछन्द)

जिन गृह जिनवर के मूर्ति मंत, जिनका होता ना आदि अंत।
है तेज निराला सूर्य कान्त, जिन शांति सुधा मय चन्द्रकान्त॥
मंदिर का उत्तम शुभ प्रमाण, लघु का भी करते है बखान।
सौ योजन के लम्बे महान्, योजन पचास चौड़ाई जान॥
ऊँचाई पचहत्तर है प्रमाण, योजन जिनगृह की श्रेष्ठ मान।
मध्यम लम्बे योजन पचास, चौड़ाई पच्चिस रही खास॥
ऊँचे साड़े सैंतीस जान, जैनागम का यह कथन मान।
आगे जघन्य कहते प्रमाण, मध्यम से आधा रहा मान॥
लम्बाई जानो एक कोष, चौड़ाई जिनकी अर्ध कोष।
हैं पौन कोष ऊँचे विशेष, जिनगृह में सोहें श्री जिनेश॥
जिनको घेरे हैं तीन शाल, जिनकी महिमा गाई विशाल।
गोपुर बतलाए चार द्वार, तरु हैं वीथी में चउ प्रकार॥

वीथी में मानस्तंभ एक, नव नव स्तूपों युक्त नेक।
मणिकोट प्रथम अन्तराल जान, ध्वज द्वितिय कोट अन्तराल मान॥
है तृतीय कोट के मध्य भाग, शुभ चैत्य भूमि का है विभाग।
प्रति मन्दिर मे हैं गर्भ गेह, शत आठ कहे जिन चैत्य येह॥
सिंहासन है जिसमें महान, जिसके ऊपर जिन विद्यमान।
है अष्ट द्रव्य महामंगलीक, अत्यन्त रहे जो शोभनीक॥
प्रत्येक एक सौ आठ जान, शुभ देवच्छंद सोहें महान्।
जिसके आगे बत्तिस हजार, शुभ हेम कलश सोहें अपार॥
द्वारों के दोनों पार्श्व जान, चौबिस हजार हैं धूपदान।
मणिमय मालाएँ अठ हजार, हैं स्वर्ण माल चौबिस हजार॥
मुख मण्डप हैं सोलह हजार, घट हेम के शोभित हैं अपार।
मालाएँ धूप घट की महान, इतनी बतलाई हैं प्रधान॥
मणिमय किंकिणियों युक्त जान, जहाँ श्रेष्ठ घंटिकाएँ महान्।
इत्यादिक महिमा युक्त द्वार, पूरब का जानो इस प्रकार॥
दक्षिण उत्तर में लघू द्वार, मालादिक आधे वस्तु सार।
मंदिर में जाए पृष्ठ भाग, मालादिक का जानो विभाग॥
मणिमय मालाएँ अठ हजार, शुभ कनक माल चौबिस हजार।
मुख मण्डप के भी अग्र आय, प्रेक्षा मण्डप शोभा दिखाय॥
वन्दन अभिषेक मण्डप अनादि, क्रीड़ा संगीत के हैं गृहादि।
गुण नर्तन गृह भी हैं विशाल, शुभ चित्र भवन जानों त्रिकाल॥
मणि पीठ पे हैं स्तूप सार, शुभ पद्म वेदियाँ हैं अपार।
प्रत्येक चार द्वारों से युक्त, स्तूप हैं बाहर वेदि युक्त॥
स्तूप रत्नमय हैं विशेष, जिनके अन्दर सोहें जिनेश।
हम वन्दन करते बार-बार, पा जाएँ हम प्रभु विभव पार॥

दोहा– **शिवपद पाने के लिए, आए आपके द्वार।**
चैत्यालय का कर रहे, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकवर्ती कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालय समूहेभ्यों जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चैत्यालय में चैत्य की, महिमा रही महान्।**
भवि जीवों का दर्श कर, होता है कल्याण॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

समुच्चय जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– नव कोटी के साथ है, वन्दन मेरा त्रिकाल।
नव देवों की भाव से, गाते हम जयमाल॥

चौपाई

जय अरहंत देव जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।
चार घातिया कर्म नशाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए॥
जो हैं अष्ट कर्म के नाशी, होते हैं सिद्धालय वासी।
नित्य निरञ्जन हैं अविनाशी, जो हैं चेतन सुगुण प्रकाशी॥1॥

कहे गये जो पञ्चाचारी, छत्तिस मूलगुणों के धारी।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, परमेष्ठी आचार्य निराले॥
उपाध्याय आगम के ज्ञाता, भवि जीवों के ज्ञान प्रदाता।
ज्ञान ध्यान संयम तप धारी, सर्वपरिग्रह के परिहारी॥2॥

साधू वीतरागता पाए, विषयाशा से रहित कहाए।
जो आरम्भ परिग्रह त्यागी, होते हैं आतम अनुरागी॥
रत्नत्रय युत धर्म कहाए, वस्तु स्वभाव का ज्ञान कराए।
दश लक्षण संयुक्त जानिए, परम अहिंसामयी मानिए॥3॥

श्री जिनेन्द्र की पावन वाणी, आगम कहलाए जिनवाणी।
द्वादशांग जिनवाणी जानो, अंगबाह्य पूरबयुत मानो॥
अकृत्रिम जिन चैत्य कहाए, रत्नमयी शास्वत कहलाए।
कृत्रिम वीतराग शुभकारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥4॥

चैत्यालय में जिनवर सोहें, भक्तों के मन को जो मोहें।
घंटा तोरण सहित बताए, शिखर के ऊपर ध्वज लहराए॥
परम पूज्य नवदेव कहाते, नवकोटी से जो गुण गाते।
वे अपने सौभाग्य जगाते, अनुक्रम से शिव पदवी पाते॥5॥

दोहा– **नव देवों की भक्ति से, होवें कर्म विनाश।**
मन की इच्छा पूर्ण हो, हो शिवपुर में वास॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **पूजा से नवदेव की, बन जाते सब काम।**
अतः पूजते हम विशद, करके चरण प्रणाम॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शकरपुर नगर स्थित श्री 1008 आदिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2539 वि.सं. 2070 मासोत्तम मासे भादौ मासे कृष्ण पक्षे बारसतिथि दिन सोमवासरे श्री लघु नवदेवता विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री नवदेवता की आरती

तर्ज–इह विधि मंगल आरति कीजे---

नव देवो की आरति कीजे, नर भव स्वयं सफल कर लीजे।
पहली आरती अर्हत् थारी, कर्म घातिया नाशनकारी॥
नव देवों...
दूसरी आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता॥
नव देवों...
तीसरी आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की॥
नव देवों...
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की॥
नव देवों...
पाँचवी आरती मुनि संघ की, बाह्य अभ्यंतर रहित संग की॥
नव देवों...
छठवी आरती जैन धर्म की, 'विशद' अहिंसा मई परम की॥
नव देवों...
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की॥
नव देवों...
आठवी आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों को मंगलकारी॥
नव देवों...
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की॥
नव देवों...
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशिष लीजे॥
नव देवों...

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं नि. स्वा.।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि. स्वा.।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्रय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वा.।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्रय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं नि. स्वा.।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वा.।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्रय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वा.।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्रय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।।
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।।
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.।

दोहा– **गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।**
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

भजन

(तर्ज–आसरा इस जहाँ में मिले....)

आज कर लो प्रतिज्ञा, सभी मिल यहाँ,
देवदर्शन को हम सब, सदा जाएंगे।
छानकर के ग्रहण जल, करेंगे स्वयं,
रात्रि भोजन कभी हम नहीं खाएंगे॥

जैनियो जैन बनकर, रहो तुम सदा,
वीर का श्रेष्ठ यह एक संदेश है।
गुरु सेवा करो नित्य, प्रति ऐ विशद,
जैन आगम का वश, ये ही उपदेश है॥

जैन आगम का नित प्रति करेंगे पठन,
संयम पालन से जीवन सजाएँगे हम।
अनशनादि सुतप धारकर के महा,
कर्म का भार हमको भी करना है कम॥

स्वपर उपकार करना कहा धर्म है,
श्रेष्ठ मानव के अपने ये कर्त्तव्य हैं।
इन गुणों से सहित जो भी संसार में,
श्रेष्ठ गुणवान मानव कहे सभ्य हैं॥

जो 'विशद' ज्ञान तप दान से हीन हैं,
शील गुण से सहित जमीं पर भार हैं।
श्रेष्ठ जीवन बिताते जो संयम सहित,
देव साक्षात् वह संत अनगार हैं॥

हम बढ़ेंगे स्वयं मोक्ष की राह पर,
बस हमारा स्वयं एक संकल्प है।
जिन्दगी का भरोसा नहीं है कोई,
हमें जीवन भी तो ये मिला अल्प है॥

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. विशद पञ्चागम संग्रह
94. जिन गुरु भक्ति संग्रह
95. धर्म की दस लहरें
96. स्तुति स्त्रोत संग्रह
97. विराग वंदन
98. बिन खिले मुरझा गए
99. जिंदगी क्या है
100. धर्म प्रवाह
101. भक्ति के फूल
102. विशद श्रमण चर्या
103. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
104. इष्टोपदेश चौपाई
105. द्रव्य संग्रह चौपाई
106. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
107. समाधितन्त्र चौपाई
108. शुभषितरत्नावली
109. संस्कार विज्ञान
110. बाल विज्ञान भाग–3
111. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
112. विशद स्तोत्र संग्रह
113. भगवती आराधना
114. चिंतवन सरोवर भाग–1
115. चिंतवन सरोवर भाग–2
116. जीवन की मन:स्थितियाँ
117. आराध्य अर्चना
118. आराधना के सुमन
119. मूक उपदेश भाग–1
120. मूक उपदेश भाग–2
121. विशद प्रवचन पर्व
122. विशद ज्ञान ज्योति
123. जरा सोचो तो
124. विशद भक्ति पीयूष
125. विशद मुक्तावली
126. संगीत प्रसुन
127. आरती चालीसा संग्रह
128. भक्तामर भावना
129. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
130. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
131. विशद महाअर्चना संग्रह
132. विशद जिनवाणी संग्रह
133. विशद वीतरागी संत
134. काव्य पुञ्ज
135. पञ्च जाप्य
136. श्री चंवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
137. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
138. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह